INDIA *without* GANDHI

काश, गांधीजी पैदा ही नहीं होते...

हरीश कुमार प्रजापत

India without Gandhi

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN:978-81-19927-26-5

Price: ₹ 420.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

India without Gandhi

(काश, गाँधी जी पैदा ही नहीं होते)

हरीश कुमार प्रजापत

लेखक के बारे में

मेरा जन्म न्यामा (चुरू), राजस्थान में 13 मार्च, 1989 को हुआ। मैंने महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय बिकानेर से ग्रेजुएशन (B.A. 2010) किया है। पढ़ाई में अंकों के मामले में मैं हमेशा औसत दर्जे का छात्र रहा। मैं टेक्निकल लाईन में कैरियर बनाना चाहता था, लेकिन किसी कारण मुझे आर्ट्स सब्जेक्ट पढ़ना पड़ा और मैं टेक्निकल लाईन में नहीं जा सका। ग्रेजुएशन करने के बाद मैं सेना में ऑफिसर बनना चाहता था, लेकिन मेरी अंग्रेजी कमजोर होने के कारण मैं CDS का Exam पास नहीं कर सका। ग्रेजुएशन करने के बाद मैं मार्बल व टाईल्स फिटिंग का काम करने लगा, और आज भी यही काम करता हूँ। 2013 में सुबीता से मेरी शादी हो गयी। 2013 में शादी होने के बाद मैंने लिखना शुरू किया। यह मेरा पहला उपन्यास है। मुझे उम्मीद है, यह आपको ज़रूर पसंद आएगा।

पुस्तक के बारे में

इस उपन्यास में मुख्यरूप से भारत में साम्यवादी/माओवादी शासन स्थापित होने की कहानी है। गाँधी जी सिर्फ भारतीयों के लिए ही नहीं बल्कि, पूरी दुनिया के लिए एक आदर्श है, लेकिन मैंने गाँधी जी को एक अलग नज़रिये से देखा और ये उपन्यास लिखा। मैंने सोचा कि, क्या गाँधी जी के बिना भारतीय राजनीति और इतिहास अधुरा है। मैंने सोचा कि, यदि भारतीय राजनीति में गाँधी जी नहीं होते तो आज भारत कहाँ होता। यह उपन्यास पढ़ने के बाद आप इस विषय पर ज़रूर सोच–विचार करना कि, क्या गाँधी जी भारतीय स्वतंत्रता के असली हिरो थे या हमने उन्हें उनकी योग्यता और काम से ज़्यादा इज़्जत बख़्श दी?

किसी भी व्यक्ति को इतिहास से पूर्णरूप से गायब करके कहानी लिखना लगभग असंभव ही है। इसलिए मैं यह मानकर चला कि मार्च 1922 की एक रात गाँधी जी की हत्या हो जाती है। उनके बाद किस तरह से भारत माओवाद/साम्यवाद की तरफ बढ़ जाता है। बस यही इस उपन्यास की कहानी है।

इस उपन्यास में आपको एक शानदार प्रेम कहानी भी पढ़ने को मिलेगी, जो आपको एहसास दिलाएगी कि, भारत की जटिल व रूढ़ीवादी सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था में प्यार करना कितना खतरनाक साबित हो सकता है।

।। धन्यवाद ।।

प्रस्तावना I

21 मार्च, 1922 को एक ऐसी घटना घटी, जिसने न केवल भारत का इतिहास बदला, बल्कि भारत का भूगोल भी बदला। 21 मार्च, 1922 की रात को भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के अग्रणी नेता महात्मा गाँधी की दिल्ली की सेन्ट्रल जेल में हत्या कर दी गई।

गाँधीजी की हत्या के बाद भारत के इतिहास ने कुछ इस तरह से पलटा खाया।

- 30 जनवरी, 1933 को भारत आजाद हुआ।
- मोहम्मद अली जिन्ना भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री तो सुभाष चन्द्र बोस भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने।
- दूसरे विश्वयुद्ध में भारत ने अमेरिका की नाक में दम कर दिया, जिसके परिणाम स्वरूप अमेरिका ने 18 अगस्त, 1945 को भारत के लाहौर शहर पर परमाणु बम गिरा दिया और दुनिया के नक्शे से लाहौर का नामोनिशान मिट गया।

गाँधीजी की हत्या के ठीक 100 साल बाद यानी मार्च 2022 को साम्यवाद के नेतृत्व में भारत यहाँ तक पहुँच गया – मार्च 2022 अमेरिका सुरक्षा परिषद् में प्रस्ताव लेकर आया है कि, उत्तरी कोरिया के खिलाफ सैनिक कारवाई की जानी चाहिए। कोरिया परमाणु हथियार बनाने की कोशिश कर रहा है और वह विश्वशान्ति के लिए खतरा बनता जा रहा है। यदि अभी उत्तरी कोरिया को नहीं रोका गया तो पूरा विश्व विनाश की तरफ बढ़ सकता है।

भारत और चीन ने प्रस्ताव को विटो कर दिया और प्रस्ताव गिर गया।

प्रस्तावना II

''सिर्फ किस तक ही सीमित रहे या कुछ आगे भी बढ़े?'' रूबी ने कहा। ''जब रेखा ने मेरे बारे में अपने परिवार को बताया तो, उन्होंने उससे कहा कि, वह नौकरी छोड़कर घर आ जाये। रेखा ने नौकरी छोड़ने से इंकार कर दिया, तो उसके परिवार ने उसके सामने मुझे या परिवार में से किसी एक को चुनने की शर्त रखी। रेखा ने अपना परिवार छोड़कर मुझे चुना। मैंने अपनी अम्मी को खोया, तो रेखा ने अपने परिवार को।..........

''हम दोनों का धर्म एक होता तो शायद हम दोनों को यह सब कभी नहीं झेलना पङता।'' – रहमत ने रूबी के सवाल को टालते हुए कहा।

''और कुछ.....?'' – रूबी ने कहा। रूबी समझ गई कि, रहमत उसके सवाल को टालने कोशिश कर रहा है।

''सगाई के दिन हम दोनों ने शपथ ली कि, हम दोनों जिन्दगी भर उन लोगों की मदद करेंगे और उनके लिए आवाज उठायेंगे, जिनके धर्म या जाति अलग–अलग है और शादी करना चाहते हैं। शादियों के मामले में धर्म और जाति के प्रभाव को खत्म करना ही हमने अपनी जिन्दगी का मकसद बना लिया, हालांकि देश अभी भी हमारे लिए सबसे ऊपर था।''

''इसका मतलब आप दोनों के बीच वो सबकुछ हो चुका है, जो शादी से पहले नहीं करना चाहिए।'' – रूबी ने कहा।

''तुम ऐसा कैसे कह सकती हो?'' – रहमत ने कहा।

''यदि आपके बीच ऐसा कुछ नहीं हुआ होता, तो बहाने निकालने की बजाय आपका जवाब सिर्फ ''नहीं'' होता।'' – रूबी ने आँख मारते हुए कहा।

''मिशन पर जाने की पहली रात रेखा ने मुझे खाने पर बुलाया और उसी रात.........................।'' – आखिर रहमत को अपना मुँह खोलना ही पड़ा।

''सिर्फ एक बार.........'' – रूबी ने आश्चर्य से कहा।

''नहीं, दो बार।'' – रहमत ने कहा।

''अभी तो आप कह रहे थे एक बार, अभी कह रहे हो दो बार, मतलब...........बार–बार.........'' – रूबी ने मुस्कुराते हुए कहा।

''नहीं, बार–बार नहीं, उसी रात दो बार।'' – रहमत ने कहा।

''शुरुआत किसने की, आपने या रेखा ने?'' – रूबी ने पूछा।

''तुम्हें इन बातों से क्या लेना देना?'' – रहमत ने कहा।

''लेना देना है........यह सब जानने से मुझे कम से कम यह तो पता चलेगा कि, इसकी शुरुआत आप करोगे या फिर मुझे करनी होगी।'' – रूबी ने कहा।

''इसकी शुरुआत उसने ही की थी,..............और कुछ जानना चाहती हो?'' – रहमत ने कहा।

''नहीं, बस इतना ही काफी है,'' रूबी ने अपने होठ रहमत के होठों पर रख दिये। इसके बाद दोनों के बीच वो हो गया, जो भारतीय संस्कृति में शादी से पहले एलाउड नहीं है।

आभार

मैं मेरे माता–पिता (राम गोपाल प्रजापत व सोहनी देवी), मामाजी (मा. भंवर लालजी कुमावत, हरलालजी कुमावत, दुर्गाराम जी कुमावत, नेमी चन्द जी कुमावत – निवासी – खातीपुरा, सीकर), मेरे अध्यापक जगदीश जी चाचीवाद एवं मेरे दोस्त विकास टेलर (न्यामा, चूरू) का मैं खास तौर से धन्यवाद करना चाहता हूँ, जिनका इस पुस्तक के लिखे जाने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इनके अलावा मैं ''मेरे कजन जयराम कुमावत (फतेहपुर) व गोविन्द जी कुमावत'', मेरे दोस्त महेश कुमावत और श्रवण जाट का भी धन्यवाद करना चाहुँगा।

|| धन्यवाद ||

Name - **Harish Kumar Prajapat**
Address - Nyama, Sujangarh (Churu),
Rajasthan 331506
E-mail - prajapat.india@gmail.com
Twitter - @harishnyama
Facebook - India without Gandhi

“मैं भारत के प्रत्येक नागरिक और भारत की व्यवस्था से उम्मीद करता हूँ कि, मेरे “अभिव्यक्ति के अधिकार” का हनन नहीं किया जायेगा।”

दोस्तों,

मेरे पहले उपन्यास “India without Gandhi काश, गाँधीजी पैदा ही नहीं हाते....” में आपका स्वागत है। मुझे गर्व है कि, मैं उस धरती पर पैदा हुआ, जहाँ अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी जैसे महान व्यक्तिव ने जन्म लिया। गाँधीजी को भारत के लोग राष्ट्रपिता कहते है और मैं भी, लेकिन मैंने उन्हें एक अलग नजरिये से देखा और यह कहानी लिखी। मैंने सोचा यदि भारत में गाँधीजी का उदय नहीं होता, तो आज भारत में क्या कुछ हो सकता था अर्थात आज भारत कहाँ होता।

किसी भी व्यक्ति को इतिहास से पूरी तरह से गायब सम्भव नहीं है। इसलिए मैं यह मानकर चला कि, मार्च 1922 की एक रात को गाँधीजी की हत्या हो जाती है और उसके बाद किस तरह से भारत का इतिहास, राजनीति और भूगोल बदला, यही इस उपन्यास की कहानी है।

यह उपन्यास सिर्फ़ एक काल्पनिक कहानी है। इस उपन्यास का यह मतलब कतई नहीं है कि, मैं गाँधी जी का सम्मान नहीं करता या इस उपन्यास के माध्यम से गाँधीजी का अपमान करना चाहता हूँ। मैं गाँधीजी का उतना ही सम्मान करता हूँ, जितना कोई भी आम भारतीय करता है। गाँधी जी मेरे लिए हमेशा आदरणीय और सम्माननीय थे और हमेशा रहेंगे।

यदि किसी को इस उपन्यास में कुछ गलत लगता है, तो मैं उनसे माफी चाहता हूँ कि, मैंने इस विषय पर उपन्यास लिखा, लेकिन मैं उनसे और भारत की व्यवस्था से यह भी उम्मीद करता हूँ कि, मेरे “अभिव्यक्ति के अधिकार” का हनन नहीं किया जायेगा।

मुझे पूरा विश्वास है कि, यह पुस्तक प्रत्येक भारतीय को यह सोचने पर मजबूर कर देगी कि, क्या हमें गाँधीजी की

आदर्शवादी विचार धारा से निकलकर यथार्थवादी विचारधारा की तरफ कदम बढ़ाना चाहिए।

भाग – I

INDIA *without* GANDHI

दोस्तों,

मेरे पहले उपन्यास "India Without Gandhi" में आपका स्वागत है। मार्च १६२२ की एक रात को गाँधी जी की हत्या हो जाती है, उसके बाद किस तरह से भारत माओवाद/साम्यवाद की तरफ बढ़ जाता है, बस यही उपन्यास की मुख्य कहानी है। भारत का समाज काफी ज्यादा राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक जटिलताओं में उलझा हुआ है। यह उपन्यास इन जटिलताओं पर सीधा प्रहार करता है।

भारत में जिस तरह की सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था है, उनमें दो अलग-अलग धर्म के लोगों की शादी होना तो दूर की बात, इस बारे में सोचना और बात करना तक अपराध माना जाता है, अन्तर धार्मिक शादियाँ तो यहाँ कुर्बानियाँ माँगती है।

इस उपन्यास का मुख्य पात्र रहमत रंगरेज और रेखा शर्मा की प्रेम कहानी में भी क्या कुछ ऐसा घटित हुआ या फिर रहमत के जिन्दगी में रूबी खान के आ जाने से सब कुछ सामान्य हो गया, गाँधी जी की हत्या किसने और क्यों की तथा किस तरह से भारत में माओवादी शासन स्थापित हो गया, जानने के लिये पढ़िये "India Without Gandhi"

लेखक से संपर्क हेतुः

prajapat.india@gmail.com

FSP

FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE

Flipkart

GET IT ON Google Play

amazon

amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-81-19927-26-5

9 788119 927265